[Shri M. S. K. Sathigendram]

Coast Guard Organisation and as a tleferic air-abise also. The strategic importance demands immediate action.

(vi) Need for taking steps to develop Mathura and Vrindaban towns of U.P. as places of tourist attraction.

श्री दिगम्बर सिंह (मथुरा) : मथुरा और वृन्दावन में भारत से ही नहीं पूरे संसार से यात्री आते हैं। जितने तीर्थ स्थान इस ब्रज क्षेत्र में हैं उतने हमारे देश में कहीं नहीं। पूरे वर्ष यात्री आते रहते हैं। अमरीका, यूरोप और अन्य देशों के जितने यात्री यहां दिखाई देते हैं अन्य स्थानों पर नहीं। इन नगरों की सरकार की ओर से उपेक्षा की गई हैं। तीर्थ-स्थानों की सूची में इन नगरों का नाम नहीं। टूरिस्ट विभाग का कोई काम भी यहां नहीं। कोई ओडिटोरियम भी नहीं। मथुरा, वृन्दावन में यमुना के घाट नहीं बनवाये। बने हुये बिना मरम्मत के टूटे जा रहे हैं। गन्दे पानी के यमुना में आने से नहाने योग्य नहीं रहा। छपाई के कारखानों का पानी यमुना के पानी को जहरीला बना रहा है।

मथुरा का भगतसिंह पार्क शौचालय बना हुआ है। सड़क व गलियां खराब हैं। नल के पानी के अभाव में जनता अत्यन्त् दुखी है। बी० स० ए० कालेज क पास गन्दे पानी की स्थाई झील बन गई है। उद्योग विभाग और आवास एवं विकास परिषद् की योजनाओं के कारण भी गन्दा पानी मथुरा नगर में ही आयगा।

मेरा केन्द्रीय सरकार से निवेदन है कि वृन्दावन में यमुना का पुल बनाया जाय। मथुरा वृन्दावन के घाट बनवाये जायें। गन्दा पानी यमुना में आने से रोका जाय। सड़क व गलियां ठीक कराने की सहायता की जाय। आडीटोरियम बनना चाहिये। टूरिस्ट विभाग ठहरने को भवन बनवाय। मथुरा वृन्दावन को तीर्थस्थानों की सूची में लाया जाय। पीने के पानी की समस्या हल की जाय, जनता के लिये श चालय बनवाय जाय। जो काम केन्द्रीय सरकार कर सकती है वह करे और अन्य के लिये उ० प्र० सरकार को अनुदान देकर सहायता करे।

(vii) Need for taking steps to improve economic condition of handloom weavers in the country.

श्री हरिकेश बहादुर (गोरखपुर) : मान्यवर, हथकरघा उद्योग से हमारे देश के कई करोड़ लोग संबंधित हैं। उनमें से अधिकांश लोगों की जीविका इसी उद्योग पर आधारित है। किन्तु यह दुख का विषय है कि इस उद्योग में लगे हुये लोगों की आर्थिक स्थिति खराब होती जा रही है क्योंकि बढ़ती हुई मुद्रास्फीति के कारण सूत और कैमिकल्स की कीमतें निरन्तर बढ़ रही हैं। आज हमारे देश में ऐसे अनेक बुनकर परिवार हैं जो भुखमरी के कगार पर पहुंचने की स्थिति में आ गये हैं। सरकार द्वारा छठी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत इस उद्योग को एक विशेष प्रकार का संरक्षण प्रदान किये जाने की आवश्यकता है। सूत और कैमिकल्स के मूल्यों में तत्काल कमी करना अत्यन्त अनिवार्य है तथा हथकरघा विकास निगमों द्वारा बुनकरों के माल की खरीद तेजी से की जानी चाहिये साथ ही पावरलूम, की अवैध खरीद तत्काल समाप्त होनी चाहिये। इस प्रकार के निगमों के अध्यक्ष किसी अनुभवी बुनकर को ही बनाना चाहिये तथा बुनकरों को दिये गये 3000 (तीन हजार) रुपये तक के कर्ज माफ कर दिये जाने चाहिये। सरकार को शीघ्र इस दिशा में कदम उठाना चाहिये।